27-5-2001

डबल लाइट बन उड़ने के लिए मेरे को तेरे में परिवर्तन कर सब बोझ बाप को दे दो

आज जब मैं वतन में बाबा के पास पहुँची तो बाबा ऐसे वरदान का हाथ जैसे सबके ऊपर घुमा रहा था। मैंने कहा बाबा मैं तो आज सबकी याद-प्यार लेके आई हूँ। बाबा ने कहा मैंने आपके पहले ही सोनीपत की धरनी को इमर्ज किया है क्योंकि इस बच्चे की (जगदीश जी की) बहुत शुभ भावना थी कि मैं भी इस सोनीपत की धरनी को देखूं, क्या-क्या नीचे हो रहा है, वह बाबा मुझे भी नीचे दिखाना। तो यह मेरा मुरब्बी बच्चा है, मुरब्बी बच्चे की तो सब आशायें बाबा रखता ही है। तो बाबा ने सिर्फ ऐसे किया जैसे किसको बुलाया जाता है, तो जगदीश जी पहुँच गये। बाबा ने कहा बच्चा, तुम्हारी यही आशा थी ना कि इस धरनी पर जो पहला प्रोग्राम हो रहा है, वह मैं ज़रूर देखूं। तो देखो। तो जगदीश जी बहुत ध्यान से एक-एक को देख रहे थे। चारों ओर लास्ट तक जैसे उनकी दृष्टि गई। सभी को देखते मुस्करा रहे थे। आप सब भी मुस्करा रहे थे। बाबा ने कहा अभी देख लिया। कहा, हाँ बाबा बहुत अच्छा देखा। तो बाबा ने कहा कि देखो बच्चे आपका जो भी संकल्प रहा हुआ है, वह यह सब भाई बहिनें पूरा कर देंगे। आप निश्चिंत रहो। तो जगदीश जी हंसने लगे। कहा बाबा मेरी यह दिल है कि जो भी सारे वर्ल्ड के इतने सब हमारे ब्राह्मण भाई-बहनें हैं, उन सबकी अंगुली से यह ऐसा स्थान बने जो वर्ल्ड में वन्डरफुल हो। जैसे और ७ वन्डर्स गिनने में आते हैं तो यह स्थान भी एक वन्डरफुल इन वर्ल्ड हो, ऐसी मेरी इच्छा है। तो बाबा ने कहा देखो आप अभी निश्चिंत हो जाओ, आपके जो सहयोगी भाई-बहनें हैं, वह ऐसे ही बनायेंगे जो वन्डर आफ दी वर्ल्ड होगा। तो बहुत खुश होते हुए कहा

कि बाबा बस मेरी और कोई इच्छा नहीं है, मेरी यही इच्छा है कि बाबा को प्रत्यक्ष करें। जो भी इस रास्ते से आवे-जावे, सुने, तो उसे बाबा-बाबा ही दिखाई दे। बस बाबा प्रत्यक्ष हो जाए, वर्ल्ड की कोई भी आत्मा बाबा के परिचय से वंचित न रहे। हर एक को कुछ तो वर्सा मिलना चाहिए। तो बाबा मेरी एक ही आशा है कि बस इस धरनी द्वारा बाबा की प्रत्यक्षता हो और सभी आत्माओं को मुक्ति व जीवनमुक्ति का वर्सा आप द्वारा ज़रूर प्राप्त हो। तो बाबा ने कहा कि अरे बाबा क्या नहीं कर सकता, वह तो जादूगर है! बाकी तुम निश्चिंत रहो। बाबा उनको बार-बार कह रहे थे, आप निश्चिंत रहो। तो जगदीश जी ने कहा कि बाबा अभी मैं यहाँ इमर्ज हुआ हूँ ना, इसलिए मुझे अपने दिल के उमंग आ रहे हैं, बाकी मैं निश्चिंत हूँ।

उसके बाद बाबा ने कहा देखो आपके लिए भोग आया है। जब आप हॉस्पिटल में थे तब खाना कम खाते थे, अभी आपके लिए जो भोग आया है, वह पेट भरके खा लो। तो कहा बाबा पहले आप मेरे को खिलाओ। तो बाबा ने कहा क्यों नहीं, तो बाबा ने भोग की थाली से हलुआ हाथ में लिया और गिट्टी बनाकर उसको खिलाने लगा तो कहा नहीं बाबा पहले मैं आपको खिलाऊंगा। तो उसने भी गिट्टी उठाई और बाबा के मुख में डाला, बाबा ने उनके मुख में डाला। ऐसे बहुत प्यार से भोग स्वीकार किया।

फिर बाबा ने कहा बच्चे, तुम्हारी जो भी आशायें हों या सन्देश देना हो तो वह बच्ची को सुना दो, वह जाकर सुनायेंगी। पहले तो वह बाबा में ही मस्त था फिर मेरे को देखा। कहा गुल्ज़ार बहन आपने तो बहुत अच्छा पार्ट बजाया है। आपने भोग लगाया, आप मेरे से मिलने आई... मेरी यही इच्छा थी। आप भी मिली, बाबा भी मिले। फिर कहा कि मेरे तरफ से सभी भाई-बहनों को यही कहना कि बस अभी जो बाबा की आशायें हैं ना - वह जल्दी-से-जल्दी पूर्ण करें। ढीलाढाला नहीं चलें। ढीले क्यों चलते हैं, उसका भी कारण सुनाया कि कोई-न-कोई चाहे संस्कार का, चाहे परिवार का, चाहे माया का, चाहे समस्याओं का... बोझ है, इस कारण ढीले चलते हैं। तो

सभी को मेरी तरफ से यही कहना कि आज सारा बोझ बाबा को दे दो। मेरा-मेरा नहीं कहो, तेरा-तेरा कहो। मेरा शब्द अगर बोलना है तो मेरा बाबा कहो लेकिन और जो हद का मेरा-मेरा है उसमें सिर्फ यही परिवर्तन करो, मेरा के बजाए तेरा करो। बस अभी बोझ हटा दो, कोई भी प्रकार का चाहे मन का बोझ हो, चाहे परिवार का हो, चाहे शरीर के कर्मबन्धन, कर्मभोग का हिसाब हो, कोई भी बोझ हो, आज आप मेरे के बजाए तेरा कर दो, बाबा को दे दो। तो आप सभी हल्के हो जायेंगे और हल्के जो होंगे वह उड़ेंगे, उसकी तेज गति होगी।

फिर बाबा ने कहा कि बच्चे को यही है कि अभी जब समय फास्ट हो रहा है - नई-नई बातें हो रही हैं। जो असम्भव बातें हैं वह भी सम्भव हो रही हैं। तो जब समय की गति फास्ट हो रही है, तो बच्चों को भी अभी तीव्रगति से सिर्फ चलना नहीं है, दौड़ना नहीं है, हाइजम्प नहीं देना है लेकिन उड़ना है। तो उड़ने में देरी नहीं लगेगी। बाकी चलने में तो पत्थर भी आयेंगे, कंकड़ भी आयेंगे। सब कुछ आयेगा लेकिन उड़ने में कोई भी समस्या नहीं। और फास्ट गति में आ करके जो बाबा की आशायें हैं, उसी समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनकरके बाबा के साथ अपने घर में चलेंगे। तो जगदीश जी ने कहा कि गुलजार बहन आप सभा से पूछना कि सचमुच सभी बाबा के साथ डबल लाइट बन उड़ने के लिए तैयार हैं? (दादी ने जब पूछा तो सभी ने हाथ उठाया) हाथ तो उठा रहे हो लेकिन बोझ भी उतारना पड़ेगा। जो भी बोझ हो, आज इस सोनीपत की धरनी पर अपना बोझ उतारकर जाना तो सच्चे सोने बन जायेंगे क्योंकि साकार बाबा सोनीपत को सोनपुट कहता था। (पुट अर्थात् बच्चा)।

ऐसे बाबा से भी रूहरूहान चल रही थी तो बीच में जगदीश जी भी बोल रहे थे। फिर बाबा को जगदीश जी ने कहा कि मुझे एक बात की बहुत खुशी है जो आपने मुझे सब सीन वतन से दिखाई। लास्ट में भी (संस्कार के समय भी) सब सीन दिखाई थी और आज भी दिखाई। मुझे यह समझ में नहीं आता

कि मेरे कौन से कर्म का पुण्य था जो इतने सारे वर्ल्ड के फारेन सहित, इन्डिया के सब ज़ोन से कोई-न-कोई आये हुए थे और आज भी कहाँ-कहाँ से मातायें और भाई इतनी गर्मी में, धूप में दूर-दूर से पहुँच गये हैं। तो बाबा आप मुझे बताओ कि मेरा कौन-सा पुण्य है? तो बाबा ने कहा तुम्हारा एक बहुत बड़ा पुण्य है, एक तो तुम आते ही स्थापना के कार्य में सहयोगी बने और ऐसे बेगरी टाइम पर आये, आते ही सेवा के लिए मकान भी दिलाया और सेवा भी आरम्भ की और आपने बहनों को सदा आगे रखा, इसीलिए आपका यह पुण्य जमा है। जैसे बाबा चाहता है कि शक्ति आगे हो, शक्ति गाइड हो और पाण्डव गार्ड हों, (रक्षक हों), ऐसे तुमने भी बहुत अच्छा किया जो बहनों को उमंग-उत्साह में लाकर सेवाओं को आगे बढ़ाया। छोटे मकान को बड़ा करा दिया। (कमला नगर में पहले छोटे दो कमरे ही थे, पहले मकान मालिक नहीं मानता था लेकिन जगदीश भाई का वह दोस्त था। उसे जगदीश जी की चलन पर, बुद्धि पर बहुत फेथ था। इसीलिए उसने हाल भी दे दिया, एक कमरा भी दे दिया।) तो बाबा ने कहा कि यह पुण्य आपका था जो आते ही आपने सहन बहुत किया। सहनशक्ति का मीठा फल होता है। तो तुमको इस पुण्य का फल मिला है।

फिर बाबा ने कहा कि अभी इनको ऐसा परिवार मिला है जो बहुत इच्छुक था, जैसे कोई देवता ने उन्हें यह बच्चा फल के रूप में दिया है। इनके जो माँ बाप बनने वाले हैं, उनकी यही वृत्ति थी कि मेरे पास ऐसा बच्चा आवे। तो उनके पास जैसे देवता से मिले हुए फल से यह बच्चा आया है। जैसे कोई बहुत आशाओं के बाद बच्चा पैदा होता है तो वह क्या होता है, इसी रीति से बाबा ने कहा कि अभी तो गर्भ में है लेकिन जन्म होगा, तो बहुत लाड-प्यार मिलेगा।

फिर जगदीश जी ने कहा कि बाबा मेरी एक और आश है, यह जो सभी गर्मी में आये हैं ना। आप इन्हों पर फाउन्टेन मुआफ़िक गुलाबवाशी डालो। तो बाबा ने कहा वतन में क्या बड़ी बात है, वह तो मैं संकल्प का स्विच आन

करूंगा, यह सब हो जायेगा। तो बाबा ने ऐसे स्विच आन किया और एक फाउन्टेन इमर्ज हो गया और उससे चारों ओर गुलाबवाशी होने लगी। फिर बाबा ने कहा और कोई आशा है? कहा नहीं बाबा, मेरी सब आशायें पूरी हुई। मेरी सबको याद देना और जो यहाँ विशेष सेवा कर रहे हैं। दिल्ली, पंजाब, हरियाणा आदि के सभी भाई-बहनों को भी बहुत-बहुत याद देना। फिर बाबा ने भी सभी को बहुत-बहुत याद दी और मैं साकार वतन में आ गई।